



दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

भारत के विमानन क्षेत्र को सुरक्षा संबंधी चिंताओं पर ध्यान देने की आवश्यकता है

भारत के विमानन क्षेत्र को सुरक्षा संबंधी चिंताओं पर ध्यान देने की आवश्यकता है

संदर्भ

- अहमदाबाद में लंदन गैटविक जा रही एयर इंडिया फ्लाइट की हालिया दुर्घटना ने विमानन उद्योग और देश को हतोत्साहित कर दिया है, जिससे सुरक्षा संबंधी चिंताओं को संबोधित करने की मांग उठ रही है।

भारत का विमानन क्षेत्र

- भारत वैश्विक स्तर पर तीसरा सबसे बड़ा घेरलू विमानन बाजार है, जो केवल अमेरिका और चीन से पीछे है।
- भारतीय आकाश पहले से कहीं अधिक व्यस्त हैं, जिसमें प्रत्येक वर्ष 240 मिलियन से अधिक यात्री उड़ान भरते हैं, और यह संख्या 2030 तक 500 मिलियन तक पहुंचने की संभावना है।
- भारत अपने कार्गो क्षमता का विस्तार कर रहा है, जिसका लक्ष्य 2030 तक माल डुलाई को 3.5 मिलियन से 10 मिलियन मीट्रिक टन तक तीन गुना करना है।

वैश्विक स्तर पर भारत की स्थिति

- अंतर्राष्ट्रीय नागरिक उड़ान संगठन (ICAO) के अनुसार, भारत की विमानन संचालन और विमान योग्यता वैश्विक औसत से ऊपर हैं, जिसमें प्रभावी कार्यान्वयन स्कोर 85.65% है, जो 2018 में 69.95% था।
- भारत ने एयरवर्थीनेस और संचालन जैसी श्रेणियों में अमेरिका एवं चीन दोनों को पीछे छोड़ दिया है, जो महत्वपूर्ण नियामक सुधारों को दर्शाता है।
- हाल ही में, भारत को नई दिल्ली में 81वें अंतर्राष्ट्रीय हवाई परिवहन संघ और विश्व हवाई परिवहन शिखर सम्मेलन में सबसे बड़े विमानन बाजारों में से एक के रूप में मान्यता दी गई।
- आगामी विंग्स इंडिया 2026 कार्यक्रम भारत के विमानन नेतृत्व के लिए एक दृष्टि वक्तव्य के रूप में कार्य करेगा, जो डिज़ाइन, विनिर्माण, समावेशिता, नवाचार और सुरक्षा पर केंद्रित होगा।

सुरक्षा और संरक्षा संबंधी चिंताएं

- नियामक निगरानी और संकट प्रबंधन:** भारत की विमानन नियामक संस्था, DGCA, को सक्रिय सुरक्षा उपायों के बजाय प्रतिक्रियात्मक प्रवर्तन के लिए आलोचना का सामना करना पड़ा है।
- अत्यधिक बोडिल नियामक ढांचा:** ICAO ऑडिट के अनुसार, भारत तकनीकी कर्मियों प्रति विमान अनुपात के मामले में वैश्विक मानकों से पीछे है।
- विमान सुरक्षा और रखरखाव:** लोड प्लानिंग, परिवेशी वायु तापमान, इंजन प्रदर्शन और विंग सतह सेटिंग्स से संबंधित चिंताएँ।
- बुनियादी ढांचा और हवाई अड्डा विस्तार:** अपर्याप्त स्क्रीनिंग प्रक्रियाएँ, साइबर सुरक्षा खतरे, और सामान हैंडलिंग में चूक की रिपोर्ट।
- संयुक्त संसदीय समिति की रिपोर्ट:** हवाई यातायात नियंत्रण में रिक्तियाँ, हवाई अड्डों पर नेविगेशन तकनीक जैसे उपकरण लैंडिंग सिस्टम (ILS), और विमान दुर्घटना जांच ब्यूरो (AAIB) के लिए कम बजट आवंटन आदि।

- अन्य चुनौतियाँ:

- उच्च परिचालन लागत और ईंधन मूल्य।
- प्रमुख हवाई अड्डों पर बुनियादी ढांचा अवरोध।
- तीव्र विस्तार के बीच पर्यावरणीय स्थिरता।

भारत में विमानन क्षेत्र में प्रमुख प्रयास

- तेजी से विस्तार और बुनियादी ढांचा विकास:** भारत ने 2014 में 74 परिचालन हवाई अड्डों से 2025 तक 160 तक दोगुना कर दिया है, जिसमें हेलीपोर्ट और वाटर एयरोड्रोम शामिल हैं।
 - प्रमुख विस्तार परियोजनाओं में वाराणसी हवाई अड्डा और बिहटा (पटना) और बागडोगरा में नए सिविल एन्क्लेव शामिल हैं।
- डिजिटल परिवर्तन:** डिजी यात्रा ऐप चेहरे की पहचान तकनीक का उपयोग करके यात्रा को सहज बनाता है।
 - eGCA प्लेटफॉर्म:** लगभग 300 विमानन सेवाओं को डिजिटल बनाया गया है।
- नीति और उद्योग वृद्धि:**
 - भारतीय वायुवाहन अधिनियम (2024):** विमानन कानूनों को आधुनिक बनाने और स्वदेशी विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए।
 - वायुयान वस्तुओं में हितों की सुरक्षा विधेयक:** विमान पट्टे और वित्तपोषण को सुदृढ़ करने के लिए।
- राष्ट्रीय विमानन सुरक्षा योजना (2024-28):** यह भारत में विमानन सुरक्षा के प्रबंधन के लिए रणनीतिक दिशा प्रदान करता है। इसमें पाँच राष्ट्रीय लक्ष्य सम्मिलित हैं:
 - लक्ष्य 1: परिचालन सुरक्षा जोखिमों में नियंत्रण कमी लाना।
 - लक्ष्य 2: सुरक्षा नियमिति क्षमताओं को मजबूत बनाना।
 - लक्ष्य 3: प्रभावी राज्य सुरक्षा कार्यक्रम का कार्यान्वयन।
 - लक्ष्य 4: अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सहयोग बढ़ाना।
 - लक्ष्य 5: सेवा प्रदाताओं द्वारा उद्योग कार्यक्रमों और सुरक्षा सूचना साझाकरण नेटवर्क के उपयोग का विस्तार करना।

आगे की राह

- सुरक्षा विनियमन और आपातकालीन तैयारियों को मजबूत करना:** डीजीसीए को एफएए (यूएसए) या ईएएसए (यूरोप) के समान अधिक स्वायत्त और तकनीकी रूप से सक्षम निकाय में बदलने की आवश्यकता है।
- विमान रखरखाव और जांच में सुधार:** नियमित रखरखाव न्यूनतम विनियामक आवश्यकताओं से परे होना चाहिए।
 - एयरलाइंस को सक्रिय सुरक्षा उपायों पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है, यह सुनिश्चित करते हुए कि कोई भी यांत्रिक या तकनीकी समस्या अनदेखी न हो।
- संकट प्रबंधन और प्रतिक्रिया प्रोटोकॉल:** आपातकालीन टीमों को आपदा प्रतिक्रिया में दक्षता में सुधार करने और प्रभावित समुदायों को अधिक प्रभावी ढंग से सहायता करने के लिए नियमित अभ्यास करना चाहिए।
 - सिम्युलेटेड संकट परिदृश्य अधिक बार होने चाहिए, और पायलटों को दबाव में प्रभावी ढंग से प्रतिक्रिया करने के लिए सर्वोत्तम संभव निर्णय लेने के कौशल से लैस होना चाहिए।

- डेटा-संचालित निगरानी: राष्ट्रव्यापी वास्तविक समय विमान स्वास्थ्य निगरानी प्रणाली (FOQA- उड़ान परिचालन गुणवत्ता आश्वासन कार्यक्रमों के समान) शुरू करें।
- वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं से सीखना: भारत मजबूत विमान सुरक्षा रिकॉर्ड वाले अन्य देशों से प्रेरणा ले सकता है, जो विश्व भर में प्रभावी साबित हुई नीतियों को लागू कर रहे हैं।
 - सिंगापुर, संयुक्त अरब अमीरात और यहां तक कि चीन जैसे देशों ने त्रि-आयामी सुरक्षा ढांचे में भारी निवेश किया है: सक्रिय विनियमन, निरंतर प्रशिक्षण और विमान के स्वास्थ्य और संचालन की वास्तविक समय डिजिटल निगरानी।

Source: TH

दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न: भारत को विमानन क्षेत्र में अपनी महत्वाकांक्षी वृद्धि को उन्नत सुरक्षा निरीक्षण और नियामक प्रवर्तन पर ध्यान केंद्रित करने के साथ कैसे संतुलित करना चाहिए?

■■■■

